IJAER/September-October 2017/Volume-6/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता का योगदान

SALIM BANADAR

M.A, M.PHIL

Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha Channai (Dharwad)

सारांशः-

अंतिम दश्क के जीवनियों में जितने भी जीवनियाँ रची गई उन में पत्रकारिता को लेकर देखने मिलता है। इन जीवनियों में जितने जीवनिकार हैं उन में ज्यादा तर पत्रिकाओं में संपादन कार्य किये हैं। भारत देश में पत्रिकाओं के माध्यम से देश के लोगों को देश आज़ाद कराने के देशभक्ति को बीज इनके मन में उतपन्न करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। साथ ही हिंदी साहित्य को बढावा देने का भी कार्य इन पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ है।

1. इंदु प्रकाश-

1885 में कांग्रेस जिन के कब्ज़े में थी, वे स्वाधीनता का सपना देखने वाले न थे। उलटा अंग्रेज़ सरकार को खुश रख कर लाभ उठाना उन का लक्ष्य था। कांग्रेस की ओछी नीति के खिलाफ 'इंदू प्रकाश' बंबई की एक पत्रिका, में धारावाहिक कुछ निबंध लिखे थे। 1893 और 1894 के दौरान पत्रिका के संपादक के.जी. देशपांडे कैंब्रिज में उनके साथ पढते थे। निबंधों में से कुछ अंश- "अतः कांग्रेस के बारे में यही कहूंगा इसका लक्ष्य गलत है। लक्ष्य पाने में आंतरिकता और लगाव भी नहीं है। इस का मार्ग टीक नहीं। जिन नेताओं पर आस्था है, वे नेता बनने लायक नहीं कुल मिलाकर कह सकते हैं हम अंधे नहीं तो कानों के नेतृत्व में राह चल रहे हैं।"

2. वंदे मातरम्-

महान देश भक्त विपिन चंद्रपाल ने स्वाधीनता आंदोलन के मुख पत्र के रूप में 'वंदे मातरम्' का अंग्रेजी दैनिक रूप में प्रकाशन शुरू किया। उन्होंने श्री अरविंद से सहयोग मांगा, भरपूर-मिला, पर देखते-देखते अखबार के पूरे दायित्व में श्री अरविंद को शामिल होना पडा।

वंदे मातरम क्रमशः खूब लोकप्रिय हुआ। इतिहासकार डॉ.राधा मुकुन्द मुखर्जी लिखते हैं- "पूर्ण स्वराज की भावधारा में अरविंद की तरह का सशक्त और यतार्थ योगदान किंचित किसी नेता का होगा। इस विचार धारा को कार्य रूप देने के लिए एक योजना भी बनायी थी। बहुत थोडे समय में उन्होंनें क्रांतिकारी आंदोलन में अपनी निर्दिष्ट जगह ले ली। दैनिक वंदे मातरम् में क्रमशः रचनात्मकता के सहारे इस आंदोलन को प्रत्यक्ष रूप में सक्रिय रखा।"

वंदे मातरम् में श्री.अरविन्द जी की लेखन केवल ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में महत्व पूर्ण है अपिन्तु उन का साहित्यिक महत्व भी है। "वंदे मातरम का प्रकाशन बंद हो गया। जेल से आकर अरविन्द ने अंग्रेजी "कर्मयोगिन" और बंगाल में "धर्म" नाम से दो पत्रिकाओं का संपादन किया। दोनों ही राजनीति से हट कर थी। इन में सामाजिक समस्याओं, दर्शन आदि पर लेख छपते। खास कर 'धर्म' में तो आध्यात्मिक चर्चा को ही ज्यादा महात्व था।"

सुब्रहमण्य भारती ने अंग्रेजों के खिलाफ अपनाये गये हिंसात्मक कार्यों को न्यायसंगत्त मानने के लिए अरविंद द्वारा वंदेमातरम पत्रिका में प्रकट मत को देखा- "अरविन्द ने 1907 की वन्देमातरम् पत्रिका में शान्तिपूर्ण प्रतिरोध के बारे में लिखे अपने लेखों को निम्न प्रकार लिखा-

"बात चीत के माध्यम से या कार्यवाइयों के द्वारा सरकार के विरूध्द संघर्ष करने के लिए कटि बध्द गुलाम नर-नारियों, निस्शस्त्र कर उन्हें हथकडी पहनाकर या कोडे से पिटवा कर उनकी हत्या कर तथा अन्य कई प्रकार के क्रूर कर्म करने वाली सरकार बगावत कर, या बम फेंककर हिंसात्मक कार्यों को प्रतिकार के रूप में अपनाने वालों को कानून के अन्तर्गत दण्डित कर सकते हैं। मगर मानव समाज की अन्तरत्मा दबाये हुए लोगों की क्रांति का ही समर्थन करेगी। कुछ स्थितियों में जनता का संघर्ष सचमुच युध्द का रूप ले सकेगा। युद्ध कालिन आचार-व्यवहार, शान्तिकालीन अचार-व्यवहार से बहुत कुछ भिन्न ही होगा। ऐसी हालत में बल प्रयोग करना, खून बहाना, हत्या करना आदि कार्यों से पिछे हट जाना बलहीनता या कमज़ोरी मानी जायेगी कुरूक्षेत्र में हत्याओं से डरने वाले अर्जुन का खण्डन करनेवाले कन्हैया का काम न्यायसंगत है। स्वतंत्रता ही एक बृहद समाज का जीवन प्राण है। जीवन लक्ष्य है। वह अगर दम तोडने की स्थिति में ही उसे दबाया जाय तो आत्म रक्षा के निमित्त अपनाये जाने वाले कोई भी मार्ग और तरिका न्यायसंगत ही माना जायेगा।"

3. इंदिया पत्रिका -

सुब्रहमण्य भारती की राजनीति के प्रति कौन सी दृष्टि और रूख ही रही है इसे जानने के लिए हमारी सहायता करने वाला प्रथम प्रमुख प्रमाण इन्दिया पत्रिका के अंक ही हैं।

यह पत्रिका 12 मई, 1906 से साप्ताहिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने लगी थी। अरविंद के वंदे मातरम् पत्रिका को नियमित रूप से पढने के बाद 4 मई, 1907 के इंन्दिया अंक में लिखा कि- "प्रतिरोध या विरोध दो प्रकार के हैं। एक जान बूझ कर लडाई करना, दूसरा आत्म रक्षा करना, पहला कटिन मार्ग है, दूसरा सरल। इन में एक कार्य का विरोध, दूसरा मानसिक विरोध। मानसिक विरोध का अर्थ यह नहीं की बिना विरोध के ही सो जाना नहीं है। इस समय विदेशी शासक हम पर हुकुमत कर रहे हैं। हम इसे दूर करना चाहते हैं, हटा देना चाहते हैं। अंतः अंग्रेजों की शासन पद्धति का विरोध करना हमारा कर्तव्य बन जाता है।

इसके लिए सेना सहित अंग्रेजों से युद्ध करने निकल पडेंगे तो विरोध कहा जायेगा। अस्त्र-शस्त्र प्रयोग से दुश्मनों का नाश कर देने का प्रयास करना क्रियात्मक मार्ग है। इन में से बाद की ही पध्दति को इस समय हमारे जन नेता स्वीकार कर चुके हैं।"

4. युगान्तर पत्रिका

विवेकानन्द जी के अनुज तथा प्रसिद्ध क्रान्तिवीर भूपेन्द्रनाथ इस पत्रिका के सम्पादक थे। उन्होंने अपनी पत्रिका के 22 अप्रैल, 1906 के अंक में लिखा- "विरों के बहाये रक्त में ही धर्म का सिध्दान्त है। सिध्दान्तों के लिए प्राण त्याग करना ही आज हमारा धर्म है।"

24 मार्च, 1907 के अंक में लिखा- "मानव का खून ही दासता के धब्बों को साफ कर सकता है। लाखों लोगों द्वारा बहाये खून के सागर को पार करने पर शासन करनेवाली देवी के लिए सोने का सिंहासन तैयार कीजिए।"

5. हिन्द स्वराज पत्रिका-

बम्बई से प्रकाशित 'हिन्द स्वराज' नामक पत्रिका के प्रकाशक शंकर लाल लल्लुभाई ठाणावाला थे। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख को सुब्रहमण्य भरती ने हूबहू तमिल पाठकों के लिए निम्न प्रकार दे दिया-

"अंग्रेज लोग ! अंग्रेज लोग ! ये अंग्रेज़ कौन हैं? ये कैसे हमारे शासक बने? पहले सरल बातें बनाकर हमें धोखा देकर हमारे विश्वास के पात्र बन गये। बाद को हमारे स्वत्व को छीनकर हमें धमकी देने लगे, डराने लगे। हमारी आज़ादी छीनकर पराधीनता रूपी गल फाँसी हमारे गले में डाल दी है। हमारे प्राचीन शिक्षा को भुला दिया है। हमें पाप के मार्ग पर चलाते हैं। हमें अपनी शस्त्र विद्या से वंचित कर दिया है। बडी चातुरी के साथ हमारे देश को हडप लिया और अपने वश में कर लिया है। बाद में हमारी उपेक्षा कर दी है। हे सरल और निष्कपट, भोले-भाले भारतवासीयों इन के कारण आप को घरों में व्यभिचार बढ गया। आपके स्वत्व को दूसरों के हाथ सौंपकर पराये लोगों के दुर्गुणों को आप लोग अपनाने लगे हैं। ये सब होते हुए आप अपनी आँखों से देख रहे है। क्या यही आप की वीरता है? हाय! यह वीरता नहीं। बल्कि कायरता है। अपनी सम्पात्ति को पराये के हाथ सौंपकर आप मुसीबत झेल रहे हैं।"

6. भारतीय समाजवादी- (Indian Sociologist)

विदेश में रहनेवाले भारतीय क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी पत्रिका 'भारतीय समाजवादी' में अगस्त 1908 निम्न प्रकार लिखा है- "बम फोड के न्याय के सम्बन्ध में

आमतौर पर कहा जा सकता है कि जिस देश में जनता को राजनीतिक अधिकार प्राप्त है वहाँ बम का प्रयोग अनावश्यक है। वहाँ वह उल्टे प्रभाव को ही उत्पन्न करेगा। मगर राजनीतिक या सैनिक रीति से अनुरक्षीत रहने पर (जैसा अब भारत में है) वहाँ बम गोले या अन्य किसी प्रकार के भयंकर शस्त्र का उपयोग करना न्याय संगत है ऐसा ही मानना ठीक होगा। उनका प्रयोग करना क्या अनुकूल है या प्रतिकूल है समस्या बन जाता है।"

7. बन्देमात्ररम् (Bande Mataram)-

विदेश के भारतीय क्रांतिकारी वीरांगना मैडम गामा ने भी अपनी बन्देमातरम् नामक पत्रिका में निम्न प्रकार लिखा- "अंग्रेज़ पुरूष और नारी की द्रृष्टि में जब रूसी देशभक्त सोफी फेरोस्क्या तथा उस नारी के मित्रगण जब वीर और वीरांगनाएँ मानी जाती हैं तो उस लक्ष्य के लिए वही कार्य करने वाले हमारे देश भक्त ही क्यों अपरादी माने जायें? अगर रूस में हिंसा को समर्थन मिलता है तो क्यों न भारत में भी उसका समर्थन हो? जहाँ भी प्रयुक्त हो अनैतिक और अत्याचारी शासन तो एक ही है। कूरता जहाँ भी है कूरता ही है। विजय ही किसी भी कार्य को न्यायसंगत ठहराती है। देशभक्ति आन्दोलन असाधारण कृत्यों की माँग करता है। विदेशी शासन के खिलाप सफलतापूर्ण विद्रोह देशभक्ति ही मानी जायेगी।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.ले- टी.एम.सी.रघुनाथन् – पु- सुब्रमण्य भारती युग और चिन्तन

2.ले- मनोज दास – पु- महान योगी श्री अरविन्द

3.ले- मोहनकिशोर दीवान – पु- नेपथ्य नायक : लक्ष्मीचन्द्र जैन